

राष्ट्रीय प्रतीक

मोर



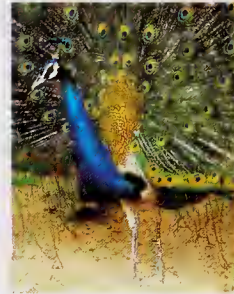
Peacock

NATIONAL SYMBOLS



राष्ट्रीय पक्षी

मोर



Peacock

NATIONAL BIRD

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति-वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

मोर

भारत में 2000 से अधिक पक्षियों की प्रजातियाँ हैं, जिनमें सर्वाधिक भव्य, मनमोहक और आकर्षक पक्षी है – मोर। वर्षा ऋतु में मोर का नृत्य आनन्द व उत्सव की भावनाएं उत्पन्न करता है।

संस्कृत में मोर को मयूर कहते हैं। मोर सांपो को मारने के लिए जाना जाता है। भारतीय चित्रकला तथा शिल्पकला में मोर की चौंच में झलते सर्प (भुजंगभुक्) के असंख्य चित्रण हैं। मोर के सिर पर कलगी या नीले तार समान पंखों का मुकुट होने के कारण इसे 'शिखी' अथवा 'शिखावल' भी कहा जाता है।

मोर, मौर्य वंश का प्रतीक चिह्न था। मौर्य नाम 'मोर' शब्द से ही गृहीत है। कहा जाता है कि मोर बादलों की गड़गड़ाहट (मेघ गर्जन) से इतना अधिक सम्मोहित हो जाता है कि पखावज अथवा मृदंगम जैसे ताल वाद्यों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि को, वर्षा के आने से पूर्व बादलों की गर्जन मानकर मानसून ऋतु का अग्रदूत बन कर नृत्य करना आरंभ कर देता है।

'नाचत मोर संग श्याम' – यहां पर 'श्याम' शब्द काले बादलों के प्रतीकार्थ को भी प्रस्तुत कर रहा है।

हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा मराठी में इसे मोर, कन्नड में नविलु; तमिल और मलयालम में मायिल; संस्कृत में नीलकंठ, भुजंगभुक्, शिखी, केकिन, मेघानन्द, शिखण्डिन; और फारसी में तौस कहते हैं।

भारतीय मोर (पावो क्रिसटेस) महोख (फेजेण्ट या फासियानिडे) परिवार का सदस्य है। मोर शब्द नर के लिए और मादा के लिए मोरनी शब्द का प्रयोग किया जाता है। इन दोनों की जोड़ी को मोर-मोरनी कहा जाता है। मोर का शरीर बड़ा और इसकी गर्दन लंबी छरहरी तथा पूँछ में लगभग 150 पंख होते हैं, जो करीब एक मीटर लंबे होते हैं। इन पर हरे, भूरे और नील लोहित (बैंगनी) रंग के आँख जैसे बिन्दु होते हैं। इस प्रजाति के नर की ही इस प्रकार की विशेष पूँछ होती है। मोरनी, पूँछ रहित भूरे रंग की पक्षी होती है और एक बार में चार से छह बड़े अण्डे देती है। मोर के बच्चों की शक्ल पहले वर्ष में अपनी मां से काफी मिलती – जुलती है। मोर एवं मोरनी द्वारा जब अण्डे "से" लिए जाते हैं, तब मोर – मोरनी का परिवार भोजन की तलाश में घूमता है। ये सर्वभक्षी पक्षी होते हैं, पर अधिकांश का प्रधान भोजन बीज और बेर ही होता है।

अपनी पूँछ सीधे ऊपर उठा कर जब मोर मोरनी के समक्ष नृत्य करता है, तब उसके झिलमिलाते पंख स्पंदित पंखे की भांति फैल जाते हैं। मोर का प्रजनन काल वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर आरंभ होता है। कड़ी, थका देने वाली गर्मी के पश्चात् वर्षा द्वारा प्रदान की जाने वाली राहत और आनन्द के साथ मोर का नृत्य जुड़ा हुआ है।

PEACOCK

There are over 2000 species of birds in India of which the Peacock is the most magnificent and elegant. During the rainy season the Peacock dance brings joy and a feeling of celebration.

The Peacock is called *Mayura* in Sanskrit, it is known to kill snakes. There are numerous depictions of the peacock भुजंगभुक् holding a dangling snake in its beak in Indian paintings and sculptures. Another name for the peacock is *Shikhi* or *Shikhavala* "the possessor of the crest", for the peacock has a crest or crown on its head of blue-wire like feathers, also called plumage, which gives it a majestic and regal appearance.

The peacock was the symbol of the Mauryas, a name derived from the word *mor* (peacock). It is said, that the peacock is so hypnotised by the sound of the thunder of the clouds that, mistaking the sounds emanating from percussive instruments such as *Pakhawaj* or *Mridangam* for the thundering of clouds before the advent of the rains, it begins to dance in sheer ecstasy to herald the monsoon season.

नाचत मोर संग श्याम - here श्याम can signify dark clouds also.



मोरों की चाल सुकुमार होती है और वे गौरवपूर्ण तथा शानदार होते हैं। मोर के पंख छोटे और गोलाई लिए होते हैं, जिनका वे तेजी से उड़ान भरने के लिए प्रयोग करते हैं, पर लंबी निरंतर उड़ान भरने के लिए ये पंख अनुपयुक्त हैं।

मोर जल्द ही पालतू बन जाता है, अतः बड़े बड़े खेतों, बागों, उपवनों और जंगलों में प्रचुर मात्रा में मोर पाया जाता है।

मोर बुद्धिमान पक्षी है। वह दोस्त और दुश्मन में सहज ही अन्तर मालूम कर लेता है। मोर अपने दुश्मन से दूर भाग जाता है, पर मित्रवत् व्यक्ति के निकट आकर अक्सर उसे भोजन देने के लिए संकेत देता है।

मोर तीक्ष्ण दृष्टि वाला एक जिज्ञासु प्रेक्षक होता है। वह शिकार की खोज करते हुए परभक्षी का तुरंत पता 'केका-केका' की चीख से खतरे का संकेत देता है।

संभवतः मोर एक प्राचीनतम, लोकप्रिय, शोभाकारी पक्षी है। व्यापार मार्गों के माध्यम से मेसोपोटेमिया की संस्कृति में 4,000 वर्ष से भी अधिक समय पूर्व मोर पक्षी का प्रवेश हुआ था और फिर वहां से मोर भूमध्य सागरीय देशों में पहुंचा। प्राचीन समय में मोर अत्यधिक सम्मानित था। उसे इतना महत्व प्राप्त था कि एक भारतीय नरेश ने भेंट स्वरूप राजा सोलोमन को मोर भेजा था। कहा जाता है कि सिकंदर भारत से इस प्रजाति को अपने साथ ले गया था और वहां से यह पक्षी प्रजाति लगभग 326 ईसा पूर्व में रोम और इंग्लैंड पहुंची।

हमें कला, सहित्य, लोक सहित्य, धार्मिक अनुष्ठानों तथा विधी-विधानों में मोर के विविध संदर्भ प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद में बताया गया है कि युद्ध देवता इन्द्र ने घोड़ों के बाल मोर के पंखों जैसे और पूंछ मोर के समान थी। अथर्ववेद में सांपों को मारने और उनके टुकड़े करने के संदर्भ में मोर के जोश का उल्लेख प्राप्त होता है। ब्राह्मण ग्रंथ ऐतरेय, आरण्यक और सांख्य में मोर को स्वर्ग का एक मनोहर पक्षी बताया गया है।

तीसरी शताब्दी ई. पू. में सम्राट अशोक ने मोर के मारे जाने पर रोक लगाकर तथा अभयारण्यों की स्थापना करके मोर को संरक्षण प्रदान किया।

महात्मा बुद्ध अपने पूर्व जन्मों में से एक में मोर के रूप में अवतरित हुए थे और अमरावती में बुद्ध भगवान के जीवन से संबंधित मोर जातक कथा प्रदर्शित है।

रामायण में कई जगह मोर का संदर्भ दिया गया है। रावण के विरुद्ध युद्ध में सहायता किए जाने पर इंद्रदेव ने मोर को पूंछ पर नयनाकृति भेंट स्वरूप दी थी। एक अन्य घटना में, जब सीता राम के लिए विलाप कर रहीं थी, तो उन्हें देख मोरों द्वारा सीता की भावनाओं के साथ एकीकृत होकर भावातिरेक तथा दुख में अपना सुन्दर नृत्य रोक दिए जाने का संदर्भ भी प्राप्त होता है। महाभारत में मृत व्यक्तियों को, पक्षियों व कीड़ों, विशेषकर मोरों द्वारा खाए जाने का विवरण है।

In Hindi, Urdu, Punjabi and Marathi the peacock is known as *Mor*, in Kannada, *Navilu*; in Tamil and Malayalam, *Mayil*; in Sanskrit, *Neelakantha*, *Bhujangabhuk*, *Shikhi*, *Kekin*, *Meghananda*, *Shikhandin* and *Candrakin*; and in Persian, *Taus*.

The Indian Peacock (*pavo cristatus*) belongs to the family of pheasants (Phasianidae). Peacock is the term used for the male, and the female is the peahen, collectively both are called peafowl. The peacock's body is large with a long slender neck and the tail has about 150 feathers that measure a metre long, with 'eye spots' of green, brown and purple. Only the male of the species has this distinguishing tail. The peahen is a brown coloured bird without the train of feathers and lays four to six large eggs and the young peafowl resemble the mother in its first year. Once the eggs are hatched, the peafowl family move around searching for food to eat. They are omnivorous feeders, but seeds and berries are the staple diet of the majority.

The peacock raises his train of feathers vertically and the glimmering feathers spread out like a fan quivering as the bird dances towards the peahen. The breeding season starts at the break of the rains and the peacock dance is associated with the joy and relief the rains bring after a gruelling hot summer.

Peacocks have a dainty gait and are stately and dignified. They have short and rounded wings, specially adapted for rapid take-off, but ill-suited for a long sustained flight.

The peacock adapts readily to domestication, therefore, it is found throughout the country, in large agricultural farms, gardens, groves and forests.

The peacock is an intelligent bird and can distinguish between friend and foe. It runs away from the enemy, but goes close to the friendly person and often signals him to feed it.

The peacock is an inquisitive observer with a keen eyesight. It readily detects a predator on the prowl and raises alarm by shrieking 'keka-keka'

It is probably the oldest known ornamental bird. More than 4000 years ago it was introduced to the cultures of Mesopotamia via trade routes and from there to the Mediterranean nations. It was so much prized in the past that Indian kings sent it as a gift to King Solomon. Alexander, it is said, carried the species from India to his own country, from where it reached Rome and then England in about 326 B.C.E.

One can find various references to the peacock in art and literature, folklore, religious rituals and ceremonies. The *Rigveda* mentions that the war God Indra's horses possessed hair like peacock's feathers and tails like those of the peacock. The *Atharvaveda* refers to the peacock's zeal in killing and chopping snakes to pieces. The Brahmanical texts like *Aitareya*, *Aranyaha*, and *Sankhya* describe the peacock as a glorious bird of the heaven.

प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास ने मोर का विशेष उल्लेख किया है। “कुमार संभव” में उन्होंने शिव तथा पार्वती के विवाहोपलक्ष्य पर मोरों द्वारा प्रस्तुत लालित्यपूर्ण, मनोहारी नृत्य का विस्तृत वर्णन किया है। मेघदूत में भी कालिदास ने जीवन के आनन्द के सर्वोच्च प्रतीक के रूप में मोर को दर्शाया है।

**‘यन्त्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा, हंसश्रेणी रचितरशना नित्यपदमा नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा, नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः।।**

जिस अलकापुरी में सारे वृक्ष सदा फूलों वाले होने के नाते उन्मत्त भौरों से शब्दायमान रहते हैं। कमलिनियाँ सदा कमलों वाली होने के कारण हंसों की पंक्तियों से निर्मित शब्दायमान रसना से युक्त रहती हैं, घरेलू मोर सदा चमकते हुए पंखों वाले होने के कारण केका-संगीत प्रस्तुत करते हुए उद्गीव रहते हैं और रात्रियाँ सदा चाँदनी वाली होने के कारण अंधकार की सत्ता के नष्ट हो जाने से सुहावनी हुआ करती है।

बृहत्संहिता के लेखक वराहमिहिर ने मोर को एक शुभ मंगलकारी पक्षी स्वीकार कर “मौर्य चित्रकम्” शीर्षक अध्याय में मोर की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उनके अनुसार मोर दर्शन से व्यक्ति विशेष को अपने कार्य निष्पादन के समय लाभ होता है।

बाबर ने अपनी आत्मकथा में भारतीय पक्षियों का वर्णन ही मोर से आरंभ किया है।

“मोर सुन्दर रंगों से परिपूर्ण एक शानदार पक्षी है। उसका शरीर सारस के शरीर जैसा बड़ा तो हो सकता है, पर वह उतना लंबा नहीं है। मोर और मोरनी, दोनों ही के सिर पर 2 अथवा 3 इंच ऊंचे 20 या 30 पंख होते हैं। मोरनी न तो रंगीन होती है और न ही सुन्दर होती है। मोर के सिर पर एक बहुरंगी कलगी होती है और उसकी गर्दन सुन्दर नीले रंग की होती है। गर्दन के नीचे उसकी पीठ के पीले, तोतिया हरे, नीले और बैंगनी (नील लोहित) रंगों की होती है। उसकी पीठ पर फूल बहुत ही छोटे होते हैं; पीठ के नीचे, जहाँ तक पूँछ के सिरे बड़े होते हैं, फूल उन्हीं रंगों के होते हैं। कुछ मोरों की पूँछ, मनुष्य की फैली हुई बांहों की लंबाई के बराबर बड़ी भी हो जाती है। अन्य पक्षियों की पूँछ की ही भांति, फूलों से सज्जित पंखों के नीचे की ओर मोर की एक छोटी लाल पूँछ होती है। मोर की उड़ान, महोखों (फेजेण्ट) की तुलना में कमजोर होती है। मोर एक या दो छोटी उड़ानों से अधिक उड़ान नहीं भर सकता। हिन्दुस्तानी में इस पक्षी को मोर कहते हैं।”

एम. एस. रंधावा – “पेंटिंग्स ऑफ बाबरनामा”

मुगल बादशाहों को मोर से विशेष प्रेम था और वे इस पक्षी को पालतू बनाकर अपने दरबार के बागों में रखते थे। बादशाह शाहजहाँ तो मोर से इतने अधिक प्रभावित थे कि उन्होंने अपने एक सुन्दर सिंहासन को

In the 3rd century B.C.E, Emperor Ashoka granted protection to the Peacock by prohibiting its killing and creation of abhyaranyas (wild life sanctuaries).

The Buddha, in one of his previous births, was born as a peacock and the *Mor Jataka*, which deals with this life of the Buddha is illustrated at Amaravati.

Several references of the peacock are made in the *Ramayana*. The 'eyes' of the peacock tail are said to be the gift of Indra, for having assisted him in a battle against Ravana. In another instance, while Sita was shedding tears for Rama even the peacocks halted their beautiful dance in compassion and sorrow. The *Mahabharata* refers to the dead being eaten by birds and insects, specifically by peacocks.

Kalidasa while describing the beauty of nature has made special mention of the peacock. In *Kumarasambhava*, he has described in detail the graceful dance by peacocks on the occasion of the marriage of Shiva and Parvati. Kalidasa talks of the peacocks as the supreme symbol of the joy of life in *Meghadoota*.

‘यन्त्रोनमत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा, हंसश्रेणी रचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः ।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा, नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः ॥’

Varahamihira, the author of *Brihatsamhita*, regards the peacock as an auspicious bird and according to him, in one of the chapters titled *Mayurachitrakam*, if one comes across peacock as one steps out for the day's business, it brings good luck.

Babar in his autobiography starts his account of the birds of India with the peacock.

"The peacock is a beautifully coloured and splendid bird. Its body may be as large as the crane's but it is not so tall. On the head of both the peacock and the peahen are 20 or 30 feathers rising some 2 or 3 inches high. The peahen has neither colour nor beauty. The head of the peacock has an iridescent collar; its neck is of a beautiful blue; below the neck, its back is painted in yellow, parrot green, blue and violet colours. The flowers on its back are much smaller; below the back as far as tail-tips are larger flowers painted in the same colours. The tail of some peacocks grows to the length of a man's extended arms. It has a small red tail, under its flowered feathers, like the tail of other birds. Its flight is feebler than the pheasants; it cannot do more than one or two short flights. Hindustani call the peacock MOR."

M.S. Randhawa- "Paintings of Baburnama"

The Mughals had a soft corner for the peacock and tamed it in their court gardens. Emperor Shahjahan was so impressed with it that he named his beautiful throne the *Takht-e-Taus* - the Peacock Throne. It had a pair of peacocks with an elevated tail made of blue sapphires and other precious stones, the body being of gold, studded with

तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन) का नाम दिया था। इस सिंहासन पर मोरों का जोड़ा है, जिनकी उठी हुई पूँछ नीले नीलम तथा अन्य बहुमूल्य पत्थरों से बनी है। इनकी शरीराकृति पन्नों से जड़ित स्वर्ण से निर्मित है और वक्षःस्थल के अग्र भाग में एक बड़ा माणिक लगा है, जहाँ 50 कैरेट की नाशपाती के आकार का मोती टंगा हुआ था। यह सिंहासन राजवंश के गौरव का प्रतीक और इसे दिल्ली के दरबार में रखा गया था। फारस का सम्राट नादिरशाह, जिसने सन् 1739 में मुगलों की राजधानी को लूट लिया था तथा इस बहुमूल्य लूट को अपने देश ले गया था।

अनेक उत्कृष्ट लघुचित्रकृति कलाकर इस सुन्दर पक्षी द्वारा प्रेरित हुए। एक चित्रकृति में सम्राट शाहजहाँ मयूर सिंहासन पर बैठा हुआ है, एक गुलाब का फूल दाहिने हाथ में है, जो राजस्व का प्रतीक है तथा बायाँ हाथ कटार पर आराम से रखा हुआ है। इस अद्भुत सिंहासन का निर्माण बिबादल खान के निरीक्षण में हुआ तथा सात वर्षों में पूर्ण हुआ था।

नीचे दर्शित चित्र चित्रकार मोलाराम द्वारा गढ़वाल शैली में बनायी गयी "गिरी गोवर्धन" शीर्षक चित्रकृति है जो मेघराज इन्द्र के कोप से ब्रज को बचाने के लिए कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाए जाने की दंतकथा से संबद्ध है। अन्य मनुष्यों तथा जानवरों के साथ मोर ने भी पर्वत के नीचे शरण ली। जब काले घने बादलों से वर्षा हुई, तब इन्द्र ने अपने श्वेत हाथी ऐरावत पर सवार होकर ब्रज पर घनघोर वर्षा करने का आदेश बादलों को दिया। गोवर्धन पर्वत पर मोर, वर्षा के प्रारंभ को प्रतीक स्वरूप उद्घाटित करता है।

गिरि गोवर्धन-लघु चित्रकृति गढ़वाल शैली, मोलाराम, 18वीं शताब्दी उत्तर काल



emeralds, had a large ruby studded in the breast, from where hung a pear-shaped pearl of 50 carats. It was a symbol of glory of the dynasty and was kept at the court in Delhi. Nadir Shah, the Emperor of Persia, who attacked and looted the capital of the Mughals in 1739, carried away their precious possessions to his country.

Shahjahan seated on the Peacock Throne, Diwan-i-Am, 1639 C.E.



भारतीय संगीत पद्धतियों के राग व रागिनियां चित्रात्मक रूप से रागमाला चित्रकृतियों में प्रदर्शित हैं, जिनमें से अधिकांश में मोर के अभिप्राय को प्रयोग किया गया है। मल्हार राग में मोर प्रेम के लिए तृष्णा (पिपासा) को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करता है। राग वसन्त में मोर की शरीर संरचना एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशिष्टता है। इसमें भगवान कृष्ण को प्रमुखता दी गई है। 'मधु माधवी रागिनी' प्रेयसी की मूक व्यथा को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करती है। अनुपस्थित प्रियतम को मोर के प्रतीक स्वरूप दिखाया गया है। ये राग तथा रागिनियां 17वीं तथा 18वीं शताब्दी की विविधशैलियों की रागमाला चित्रकृतियों की शृंखलाओं में देखी जा सकती हैं।

'मधु माधवी रागिनी' 18वीं शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य की बूंदी शैली की चित्रकृति का एक सुन्दरतम उदाहरण है। ग्रीष्म ऋतु के गर्म दिन समाप्त हो चुके हैं और आकाश में छाए बादल वर्षा ऋतु के प्रारंभ में ऋतु परिवर्तन का समाचार लेकर आते हैं। मंत्रमुग्ध हो मोर अपनी पुकार से प्रकृति में निहित सौन्दर्य के प्रति अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। महल की स्त्रियां आई हुई पक्षियों को दाना और पानी दे रही हैं। एक स्त्री पात्र थामे है, जबकि एक अन्य स्त्री मोर को भोजन खिला रही है।

भारत में मुगल शासन का संस्थापक बाबर, पक्षियों और पशुओं का प्रेमी था। उसने पक्षियों, पशुओं और फूलों की चित्रकृतियां बनाने के लिए कलाकारों को नियुक्त किया। बाबर की आत्मकथा "बाबरनामा" में गिलहरी, मोर तथा मोरनी, सारस, बगुलों एवं विभिन्न प्रकार की मछलियों का वर्णन एवं चित्रण है। एक चित्रकृति, भवानी नामक चित्रकार द्वारा बनाई गई है, जिसे पक्षियों तथा पशुओं की चित्रकारी में दक्षता प्राप्त थी। चित्रकृति में ऊपर की ओर, पेड़ पर गिलहरियां खेल रही हैं। बीचों बीच मोर का एक जोड़ा दिखाया गया है। इसके नीचे की ओर सारस का जोड़ा और तालाब में मछलियों का जोड़ा है। यह बाबरनामा में प्रस्तुत पक्षियों की अत्यंत सुन्दर चित्रकृतियों में से एक है।

मुगल सम्राट जहांगीर ललित कलाओं का संरक्षक था, जिसने उच्च स्तरीय कृतियां निर्मित करने हेतु अपने कलाकारों व शिल्पकारों को प्रेरित किया। मंसूर द्वारा चित्रित जहांगीर की "मोर मोरनी" एक उत्कृष्ट कलाकृति है। उस्ताद मंसूर अत्यंत सिद्धहस्त एवं प्रसिद्ध चित्रकार थे, जिन्हें "नादिर-उल-अस्र" (वंडर ऑफ दि वर्ल्ड) का खिताब दिया गया था। यह चित्रकृति मोर पक्षी के लालित्य तथा चारुता को प्रदर्शित करती है। मोर अपनी चोंच में एक छोटे-से सांप को थामे आगे भागता है। मोरनी उस सर्प के तड़पते छोटे-छोटे टुकड़ों को देखने के लिए अपनी गर्दन घुमाती है। उसकी मुखाकृति को विशिष्टतापूर्वक दर्शाया गया है और इसके अतिरिक्त पैर के पृष्ठ भाग की गति, सिन्दूरी रंग में गोलाकार पंखयुक्त गर्दन, सुदूरवर्ती पहाड़ियों, पथरीली चट्टानों, वृक्षों तथा फूलों से युक्त सूक्ष्म वर्णन किया गया है।

मोर का पंख भगवान कृष्ण के मुकुट पर सुशोभित होता है। मोर के पंख महलों, घरों व मंदिरों में रखे जाते हैं तथा मस्जिदों और मजारों में भी मौलवी आशीर्वाद देने हेतु भक्त के सिर पर मोर के पंखों से स्पर्श करते हैं।

भगवान शिव के पुत्र, कार्तिकेय अथवा स्कन्द अपने वाहन (कार्तिकेय षण्मुख) मोर पर सवार हैं। मोर को एक हिमायती, विजेता योद्धा के रूप में जाना जाता है और उसे देवताओं की सेना का प्रधान माना जाता है। महाभारत तथा पुराणों में, मोर पर सवार भगवान कार्तिकेय के विवरण प्राप्त होते हैं, जिन्होंने तारकासुर का नाश तथा त्रिपुरारी के रथ की रक्षा की थी।

Many eminent miniature painting artists were inspired by the beautiful bird. In a painting, the emperor Shahjahan, seated on the Peacock Throne, holds a rose, the Mughal symbol of royalty, in his right hand, and his left hand rests lightly on the dagger. This marvellous throne was constructed under the supervision of Bebadal Khan and was completed in seven years.

The painting titled "Giri Govardhan" is associated with the legend of Krishna lifting the mountain to protect Braja from the wrath of the rain God Indra. The peacock along with human beings and other animals took refuge under the mountain. While rain pours from dark black clouds, Indra mounted on his white elephant, the *Airavat*, orders the clouds to pour down heavy rain on Braja. A peacock on the Mount Govardhana symbolises the onset of rainfall.

Indian musical modes, the *ragas* and *raginis* are pictorially represented in the Ragamala Paintings, many of which use the peacock motif. In *Malhara Raga*, the peacock represent thirst for love. In *Raga Vasanta*, the plumage of the peacock is a prominent feature, the focus is on Lord Krishna. The *Madhu-Madhavi Ragini* depicts the silent longing of the beloved or the lover, the peacock symbolising the absent lover. These *ragas* and *raginis* and many others are seen in series of Ragamala Paintings of several schools of the 17th and 18th centuries.

Ragni Madhu Madhavi, Jaipur, Rajasthan, Painting about 1630 C.E.



मोर को अन्य अनेक देवी-देवताओं के वाहन के रूप में भी जाना जाता है, जैसे:

गणेश (अपने एक अवतार में) – मयूरेश, मयूरेश्वर

कौमारी (दुर्गा का रूप) – शिखिवाहना

सरस्वती – यद्यपि सामान्यतः हंस को सरस्वती वाहन माना जाता है, तद्यपि कुछ ऐसे संदर्भ प्राप्त होते हैं, जिनमें देवी सरस्वती को मयूर पर सवार बताया गया है तथा कुछ प्रस्तुतियों में मोर को देवी सरस्वती के पास खड़ा दिखाया गया है।

कार्तिकेय, उत्तर चोल, 12वीं शताब्दी ई०



Ragini *Madhu-Madhavi* is one of the finest examples of Bundi Painting of the mid 18th century C.E. The hot days of summer are over and dark clouds in the sky bring joyous tidings of the onset of the monsoon season. The peacocks are enchanted and respond to the beauty in nature. The ladies of the palace offer the perching birds food and water. One lady holds the vessel while the second feeds a peacock.

Babar, the founder of Mughal rule in India, was a great lover of birds and animals. He commissioned artists to make paintings of birds, animals and flowers. In his autobiography "Baburnama" there is a description of the painting of "Squirrels, A Peacock and A Peahen, Sarus, Cranes and Fishes". This painting is by Bhawani, who excelled in painting birds and animals. On the top, squirrels are playing on a tree. In the middle, a peacock and a peahen are shown, below this is a pair of Sarus cranes, and in the pond, a pair of fishes. It is one of the most beautiful paintings of birds and animals in the Baburnama.

The Mughal emperor, Jahangir, was a patron of fine arts who motivated his artists and craftsmen to produce works of the highest quality. Jahangir's "Peafowl", painted by Mansur, is a masterpiece. Ustad Mansur was the most famous animal painter and was given the title, "Nadir-ul-Asr" (Wonder of the World). The painting depicts the grace and elegance of the bird. The peacock rushes forward with a small snake in his beak. The peahen twists her neck to watch the squirming morsel. The plumage has been exquisitely painted and great attention has been paid to fine details like the movement of the rear leg, rounded feathered neck in vermillion, the landscape suggestive of distant hills and rocky cliffs, trees and flowers.

Peafowl, painted by Ustad Mansur, Mughal painting, 1610 C.E.



षड्जं वदति मयूरः पुनः स्वरमृषभं चातकों ब्रूते।
 गांधाराख्यं छागो निगदति च मध्यमं क्रौञ्चः॥
 गदति पञ्चममञ्चितवाक्पिको रटति धैवतमुन्मददर्दुरः।
 शृणि समाहतमस्तक कुञ्जरो गदति नासिकया स्वरमंतिकम्॥

कालिदास – 'रघुवंश महाकाव्य'

मयूर द्वारा षड्ज, चातक द्वारा ऋषभ, छाग द्वारा गांधार, क्रौञ्च द्वारा मध्यम, पिक द्वारा पंचम, दर्दुर द्वारा धैवत तथा कुञ्जर द्वारा निषाद स्वर की उत्पत्ति होती है। इन सातों पशु-पक्षियों को तत्तत् स्वर की उत्पत्ति के कारण विशेष महत्त्व प्राप्त है।

मोर, शिक्षा तथा भारतीय संगीत की देवी सरस्वती के साथ भी निकट रूप से संबद्ध है। सांगीतिक सप्तक के मूल प्रमुख स्वर षड्ज के निर्माण में मयूर का संदर्भ निर्विवाद रूप से प्राप्त होता है – षड्जं वदति मयूरः। इससे मन में एक संभावना जागती है कि सरस्वती देवी निश्चित रूप से संगीत से संबद्ध हैं, उन्होंने अपने हाथों में वीणा पकड़ी हुई है। मयूरी नामक एक वीणा भी है।

मोर की आकृति का चित्रण सर्वप्रथम हड़प्पा के अस्थि कलशों पर प्रकट हुआ। इसमें मृत व्यक्ति की आत्मा अथवा सूक्ष्म शरीर को मोर के उदर पर अनुप्रस्थ मुद्रा में अवस्थित दिखाया गया है। ऐसा विश्वास था कि ये पक्षी आत्मा को दूसरे विश्व में ले जाते हैं।

प्रथम शताब्दी ईसा पू. के आश्चर्यजनक सांची स्तूपों के पाषाण प्रवेश द्वारों के स्तंभों व प्रस्तर पादों पर दो मोर शोभावृद्धि कर रहे हैं। प्रत्येक आकृति पंखे के समान सीधे पंखों पर अवस्थित गोलाकार नेत्रों को विस्तार से प्रदर्शित करती है। कहा जाता है कि भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के बीच हो रहे झगड़ों से उकता कर शांति की तलाश में जंगल में चले गये, जहां उन्हें जंगली और पालतू जानवरों ने विधिवत आदर प्रदान किया। सांची स्तूपों के तोरण पर बने मोर, कलाकारों की विशेषज्ञता तथा शिल्पकृति की पूर्ण दक्षता को उद्घाटित करते हैं। इन स्तूपों में शिल्पात्मक कला के रूप में पशुओं का प्रस्तुतीकरण अपनी पूर्ण पराकाष्ठा पर है।

साँची-स्तूप के उत्तर द्वार पर मोर एवं मोरनी, सातवाहन वंश, प्रथम शताब्दी ई. पू.



The peacock feather decorates the crown of Krishna and fans made of peacock feathers were kept in palaces, homes and temples. In mosques and *majhars* also, the priest touches the head of a devotee with peacock feathers to bless him.

Karttikeya or Skanda, the son of Shiva is seated on a peacock which is his vehicle or *Vahana* (कार्तिकेय षण्मुख). He is identified as the champion fighter and commander-in-chief of the army of gods. The Mahabharata and the Pauranic texts carry descriptions of Karttikeya, mounted on the peacock, who defended Tripurari's chariot and destroyed Tarakasur.

The peacock is also known as the vehicle of several other deities such as :

Ganesh (गणेश) (in one of his incarnations) - **Mayuresha** (मयूरेश),

Mayureshwar (मयूरेश्वर)

Kaumari (कौमारी) (form of Durga) - **Shikhivahana** (शिखिवाहना)

Saraswati(सरस्वती)- although usually swan (हंस) is her vehicle, there are some references to her riding a peacock (मयूर)also, in some depictions the *Mayura* is installed by her side.

षडजं वदति मयूरः पुनः स्वर मृषभं चातको ब्रूते।
गांधाराख्यं छागो निगदति च मध्यमं क्रोज्जः॥
गदति पञ्चममञ्चितवाक्पिको रटति धैवतमुन्मददुर्दुरः।
शृणि समाहतमस्तक कुञ्जरो गदति नासिकया स्वरमतिकम्॥

Kalidas - 'Raghuvansha'

The peacock is also closely associated with Saraswati, the goddess of learning and with Indian music. The association of *Mayura* (मयूर) in producing the basic keynote of the musical gamut - षडज. षडज वदति मयूरः is an uncontroversial convention. It brings to mind a possible relevance to the fact that the Goddess Saraswati is convincingly associated with music holding a Veena in her hands - *Veenadharani* (वीणाधारिणी). There is also a Veena known as *Mayuri Veena* (मयूरी वीणा).

The peacock is first seen on the funeral urns of Harappa. The dead man's spirit or *suksma sarira* is depicted as horizontally placed in the belly of the peacock which these birds are supposed to transport to the other world.

The fabulous Sanchi Stupas of the Ist century. B.C.E have group of twin peacocks decorating the architraves and posts of the stone entrance gateways, each figure shows in detail the circular eyes on the erected fan-tail feathers. The legend goes that Lord Buddha, tired of the disputes among his disciples, left for the forest in search of peace where he was given due respect by all the animals, amongst them were a pair of peacocks. The peacocks on the Sanchi *torana* reveal the mastery and expertise of the artists. In Sanchi the representations of animals in sculptural art reached a high stage of perfection.



पांचवी शताब्दी के देवगढ़ स्थित दशावतार मंदिर में शेषशायी विष्णु मूर्तिफलक के ऊपरी भाग में उड़ते मोर की पीठ पर सवार कार्तिकेय का भव्य प्रस्तुतीकरण है। मध्यप्रदेश की कुछ गुप्तकालीन पाषाण शिल्पकृतियों में भी मोर पर सवार कार्तिकेय को प्रदर्शित किया गया है। अमरता का प्रतीक—मोर परंपरागत रूप से सर्पों का नाशक है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से सम्बन्धित शास्त्रों के अनुसार मयूर द्वारा सर्पहत्या उसके कालजयी होने का प्रतीक है एवं इससे मयूर की शत्रु दमन शक्तियाँ उद्घाटित होती हैं। अतः मोर को देवताओं में व्यापक रूप से लोकप्रिय एवं सेनापति, कार्तिकेय के वाहन का पद उचित ही प्रदान किया गया है।

मोर की सुन्दरता, लालित्य और मित्रतासुलभ गुणों के साथ ही साथ पिछली अनेकानेक शताब्दियों से पुराणों, दंतकथाओं तथा साहित्य में मोर के प्रचुर संदर्भ को देखते हुए वर्ष 1963 में मोर को भारत का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया।

In the famous 5th century temple of Deogarh, there is a remarkable depiction of a flying peacock with Karttikeya on its back on the upper portion of *Sheshashayi Vishnu*. Some of the Gupta stone sculptures from *Madhyadesha* also depict Karttikeya mounted on a peacock. Karttikeya is seen sitting on his mount the peacock, Paravani. The Peacock, the bird of immortality is traditionally the killer of serpents. Cosmologically the serpent is a symbol of the cyclic concept of the time. In killing the serpent, the peacock annihilates time - which indicates its power to destroy enemies. Therefore, it has appropriately been attributed the status of the *vahana* of Karttikeya, the generalissimo of Gods.

Considering its beauty, grace and qualities of friendship as well as its reference in myth, legend and later literature dating back to several centuries the Peacock was declared as India's National Bird in 1963.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

मौर्य राजवंश का नाम मोर (मयूर) पक्षी के ही आधार पर रखा गया था। मौर्यकालीन स्वर्ण व रजत अनेकानेक सिक्कों पर मोर की आकृति अंकित मिलती है। मौर्यकालीन मोर अंकित कुछ स्वर्ण, रजत सिक्कों के चित्र बनाइये अथवा एकत्रित कीजिए।

‘तख्त-ए-ताऊस’ (मोर सिंहासन) पर एक अनुच्छेद लिखिए।

मोर के साथ जुड़ी दंतकथाओं में से कहानियां एकत्रित कीजिए।

संग्रहालयों तथा कला वीथिकाओं की यात्रा कर मोर को प्रदर्शित करने वाली संगृहीत वस्तुओं एवं चित्रकृतियों का अध्ययन कीजिए।

वर्षा ऋतु में मोर द्वारा किए जाने वाले नृत्य पर एक कविता/अनुच्छेद लिखिए।

वर्षा के साथ मोर की पुकार के जुड़े होने के कारण खोजिए।

पक्षियों के गिरे पंख एकत्रित कर प्रत्येक पंख का विवरण देते हुए चित्र संग्रह (एलबम) तैयार कीजिए।

भारत के “संकटापन्न पक्षियों” (एन्डेन्जर्ड) तथा उनके संरक्षण से जुड़े कानूनों की एक सूची बनाइए।

Creative Activities for Students and Teachers

The Mauryan dynasty was named after the bird Peacock (*Mayura*). A number of Mauryan gold and silver coins show the peacock. Collect pictures or draw some of the Mauryan gold and silver coins showing the peacock.

Write a paragraph on the "Peacock Throne".

Collect stories from legends associated with the peacock.

Visit the Museums and Art Galleries and study artefacts and paintings showing the peacock.

Write a poem/paragraph on the dance of the peacock during the rainy season.

Find out why the peacock call is associated with rain.

Collect fallen feathers of birds and make an album describing each feather.

Make a list of "endangered birds" of India and laws related to their protection.

About CCRT

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organizes a variety of training programmes for administrators, teacher educators, in-service teachers of all levels and students. These aim at sensitizing the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The digital slide-album of performing arts, natural environment and plastic/visual arts containing images along with descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The films on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

Since 1982, the CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children in the age group of 10-14 years to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has been awarded for implementation the Scheme namely "Award of Scholarships to Young Artistes in different Cultural fields", under which 400 scholarships are provided in the age group 18-25 years in the field of Indian Classical Music, Classical Dances, Light Classical Music, Theatre, Visual Arts and Folk, Traditional and Indigenous Arts.

The CCRT has also been awarded for implementation the Fellowship Scheme namely "Award of Fellowship to outstanding persons in the Field of Culture", under which 200 Junior and Senior Fellows each are selected every year. The focus is on "in-depth study/research" in various facets of culture. These include New Emerging Areas of Cultural Studies.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

For further details you may visit our website: www.ccertindia.gov.in

Acknowledgements

Dr. Sumati Mutatkar

Dr. B. N. Goswamy

References

- Asian Folklore Studies, (1974), VOL. XXXII, "The Peacock Cult in Asia, "Japan.
Jobs, Gertrude, (1963), " Dictionary of Mythology, Folklore and Symbols", London.
Journal of the Asiatic Society, (1973), Calcutta.
Nair, P.T., (1973), "Peacock-National Bird of India", Kolkata.
Randhawa, M.S., (1983), "The Paintings of Baburnama", New Delhi.
Sivaramamurthi, C., (1975), "Birds and animals in Indian Sculpture", New Delhi
Vedas, Rig, Yajur and Atharva.
Zimmer, Heinrich, "Myths and Symbols in Indian Art and Civilization", London.

Photo Credits

National Museum, New Delhi

Sangeet Natak Akademi, New Delhi

B.N. Khazanchi.

Phal S. Girota.

Stanley and Belinda Breeden, World Wide Fund for Nature-India.

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem

National Flower

National Flag

National Bird

National Anthem

National Animal

National Song

National Calendar



First Edition 1998
Reprint Edition 2017
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2017

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at India Offset Press, Delhi-110064